B.A II (Hons) Paper – III

① आचार्य हेमचन्द्र का परिचय-

Q1. आचार्य हेमचन्द्र के जीवन काल एवं कृतित्व का संक्षेप विवेचन प्रस्तुत करें।

Ans- सामान्य परिचय- आचार्य हेमचन्द्र अपने समय के एक प्रबुद्ध व्याकरण माने जाते हैं। इनका जन्म वि०सं० 1145 से गुजरात के चन्धुका नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम चाचदेव या चाचिग देव और माता का नाम पाहिनी था। इन्होंने अल्प समय में ही तर्क व्याकरण, काव्य, अलंकार छंद और आगम आदि ग्रन्थों का गंभीर अध्ययन समाप्त कर लिया था। इन की प्रतिभा अत्यन्त प्रखर थी। जिस प्रकार पाणिनी ने अष्टाध्यायी की रचना कर संस्कृत व्याकरण का सुव्यवस्थित रूप दिया उसी प्रकार आचार्य हेमचन्द्र ने अपने समय में उपलब्ध समस्त शब्द शास्त्र का अध्ययन कर एक सर्वाङ्गपूर्ण उपयोगी एवं सरल व्याकरण की रचना कर संस्कृत और प्राकृत दोनों ही भाषाओं को पूर्ण तथा अनुशासित किया।

हेमचन्द्र का अन्य व्याकरणों से तुलना- जहाँ तक प्राकृत व्याकरण में हेमचन्द्र के स्थान निरूपण का प्रश्न है हमें पहले इनके व्याकरण की तुलना ऊँचा व्याकरणों की व्याकरणों से करनी होगी। प्राकृत भाषा का व्याकरण प्राकृत में न होकर संस्कृत में ही है। कुछ प्रमुख व्याकरणों की तुलना हेमचन्द्र के व्याकरण से निम्नलिखित रूप में की जा सकती है।

(1) भरत के नाट्य शास्त्र से - उपलब्ध व्याकरणों में भरत के नाट्यशास्त्र में संक्षिप्त रूप दिए हुए प्राकृत व्याकरण का नाम सर्व प्रथम लिया जा सकता है। पर भरत के इस व्याकरण में प्राकृत के अनुशासन संबंधी सिद्धान्त इतने संक्षिप्त और अस्फुट हैं कि इनका उल्लेख मात्र इतिहास के लिए ही उपयोगी रह गया है।

(2) वररुचि के प्राकृत प्रकाश से - वररुचि ने महाराष्ट्रीय शौरसेनी मागधी और पैशाची इन चार प्राकृत भाषाओं का नियमन किया है। और हेमचन्द्र ने महाराष्ट्री शौरसेनी और चूलिका पैशाची का अनुशासन हेम के रुचि की अपेक्षा नया है।

(3) चण्ड के प्राकृत लक्षण से - वररुचि के बाद प्राकृत व्याकरणों में चण्ड का स्थान आता है। इन्होंने प्राकृत लक्षण नामक एक छोटा सा आर्ष प्राकृत का व्याकरण लिखा है। प्राकृत लक्षण और सिद्ध हेमशब्दानुशासन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर ऐसा ज्ञात होता है कि प्राकृत लक्षण आर्ष प्राकृत भाषा का अनुशासन भी अपूर्ण है, पर हेम. व्याकरण सभी प्रकार की प्राकृतों का पूर्ण और सर्वांगीय अनुशासन करता है।

(4) त्रिविक्रम देव के प्राकृत शब्दानुशासन से - जिस प्रकार हेमचंद्र ने सर्वांगपूर्ण प्राकृत शब्दानुशासन लिखा है उसी प्रकार त्रिविक्रम देव ने भी लिखा है दोनों शब्दानुशासनों का वर्णन विषय प्रायः समान ही है। यह प्रकरण हेमचन्द्र की अपेक्षा विशिष्ट है परन्तु इनका यह कार्य शब्द शासक न होकर अर्थ शासक हो गया है।

(5) लक्ष्मी चन्द के षड्भाषा चन्द्रिका से — त्रिविक्रम देव के व्यवस्था के रूप में लक्ष्मीधर और सिंहराज का नाम लिया जाता है। लक्ष्मीधर ने सिद्धान्त कौमुदी का अनु. रखकर उदाहरण सेतुबन्ध, गउडवहो, गाहा सत्तसई कर्पूर मंजरी आदि ग्रन्थों से लिया है और छः प्रकार की प्राकृत भाषाओं का अनुशासन प्रकरणानुसार लिखा है फिर भी इसमें हेम० व्याकरण की तरह मौलिकता नहीं आ पाई है

(6) सिंहराज के प्राकृत रूपावतार से — सिंह राज जी अन्य व्याकरणों की न कौमुदी के ढंग का इनका प्राकृत ~~व्याकरण~~ है रूपावतार नामक ग्रन्थ है।
शब्द, धातु रूप समास तद्धित आदि

(7) मार्कण्डेय के प्राकृत सर्वस्व से — मार्कण्डेय जी शताब्दी के एक प्रमुख व्याकरणाचार्य माने जाते हैं — यह सत्य है कि हेमचन्द्र का प्रभाव मार्कण्डेय पर प्रतीत है।

रचना —

(1) सेतुबन्ध (2) गउडवहो (3) गाथासप्तशती वज्जालग्गं (4) कर्पूरमंजरी (5) और रत्नावली आदि ग्रन्थ है।

आचार्य हेमचन्द्र का देशी शब्दों का यह शब्द कोष बहुत महत्वपूर्ण है।

हेमचन्द्र व्याकरण का महान लेख है।
अतः हेमचन्द्र का जीवन काल बहुत विस्तारी रूप से किया गया है।